هندى

# لماذا أسلم هؤلاء ؟

# इन लोगों ने इस्लाम क्यों स्वीकार किया ?


إعداد

عطاء الرحمن بن عبدالله سعيدى

अताउर्रहमान सईदी



**إعداد و إصدار**

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد

و توعية الجاليات بالأحساء

# भूमिका

इस संसार में विभिन्न प्रकार के धर्म पाये जाते हैं तथा हर एक इस बात का याचना करता है कि हमारा धर्म सत्य है। प्रन्तु वस्तुस्थिति यह है कि वही धर्म सत्य है जिसे विश्वकर्ता ने उतारा तथा सारे लोगों के लिए निर्वाचित किया हो और वह इस्लाम है। शुभ कुर्आन में है :

إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْأِسْلامُ (آل عمران:थ© NO DISTRIB ALLOWED)

निःसंदेह अल्लाह के निकट धर्म इस्लाम ही है।(सूरह आले इमरान१९)

وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْأِسْلامِ دِيناً فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ

जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त किसी और धर्म को चाहे तो कदापि उसे स्वीकार नहीं किया जायेगा तथा प्रलोक में वह घाटे उठाने वालों की पंक्तियों में होगा। (सूरह आले इमरानः८५)

अल्लाह ने इस्लाम धर्म ही को अपनी प्रसन्न्ता का कारण बनाया तथा अपने अवतारों को इसी के प्रचार एवं प्रसार का आदेश दिया और सारे अवतारों ने इसी का एलान किया।

इस पुस्तक में मैं ने ऐसे लोगों की कहानी उन्ही की ज़बानी लिखा है जिन्हों ने इस्लाम को पढ़ा तथा

समझा फिर उसे हृदय से स्वीकार कि जबकि यह वैज्ञानिक,चिकित्सक,चतुर लोग हैं।

इस पुस्तक के लिखने का उद्देश्य केवल यह है कि हम संसार वालों को बता सकें कि आपके इन मित्रौं के इस्लाम स्वीकार करने का कारण क्या है ? तथा वे प्रलोक में क्या चाहते हैं ?

साथ ही साथ मैं सारे लोगों को निमंत्रण देता हूँ कि हर एक इस बात पर ध्यानपूर्वक मननचिन्तन करे कि हमारा तथा संसार की सारी वस्तुओं का रचयिता और पलानहार ,अननदाता,शक्तिवाला तथा पूज्य कौन है ? र्स्वग कैसे प्राप्त हो सकता है ? हमारा पलानहार हम से कैसे प्रसन्न होगा ? क्या कोई भी सृष्टि पूज्य हो सकता है ? सारे अवतारौं का धर्म क्या था ?इस पुस्तक के लिखने में मैं ने अरबी भाषा में लिखी गई किताब (हमने इस्लाम क्यों स्वीकार किया.अनुवादक.मुस्तफा जबर)तथा इस्लाम वेब साइट से सहायता लिया है अल्लाह से प्रार्थना है कि वह सारे मनुष्यों को अपना धर्म स्वीकार करने की दैवयोग दे। आमीन

आप का शुभेच्छुक
अताउर्रहमान सईदी
इस्लामिक सेन्टर अल-अहसा

## जलालुद्दीन लोडेर बरन्तून

Sir.Jalaulddin louder Brunton (1)

इन्हों ने आक्सफोर्ड़ विश्व विद्यालय में शिक्षा प्राप्त किया और अंग्रेज़ के बहुत बड़े लोगों मेसे थे तथा इनको जगत्प्रसिद्ध मिली थी.

में इस शुभ अवसर पर बहुत ही प्रशस्त एवं प्रसन्न हूँ कि मुझे संक्षिप्त शब्द मैं अपने इस्लाम स्वीकार करने का कथा बयान करने का अवसर मिला है।

कई वर्षों से मैं इस बात पर ध्यानपूर्वक सोच रहा था कि अनेक निर्वाचित भले लोगों के सिवाय सारे लोगों को प्रलोक दराड दिया जायेगा। इस से हमें काफी विस्मय एवं शंका लगा रहता था। अतः धीरे धीरे हमें पालनहार के अस्तित्व का पक्का विश्वास हो गया फिर मैं दूसरे धर्मों का अध्ययन करने लगा जिस से मेरी विस्मय और बढ़ने लगी। दूसरे धर्मों के अध्ययन से यह लाभ हुवा कि वास्तविक पालनहार पर मेरा विश्वास बढ़ता गया और वास्तविक पालनहार की उपासना तथा उसके मार्ग पर चलने का उल्लास एवं अभिलाषा  अधिक से अधिक हो गया।

लोगों का कहना है कि ईसाई आस्था का मूल इन्जील है,लेकिन उसे पढ़ने के बाद पता चला कि उस में घृणा,पारस्परिक तथा टकराव है, तो क्या ऐसा हो सकता है कि इन्जील तथा ईसा मसीहह् की शिक्षा में परिवर्तन हुवा हो? फिर दो बारह मैं पूर्ण सूक्ष्मदर्शी से इन्जील पढ़ने लगा तो हमें पता चला कि इस में इस प्रकार टकराव तथा पारस्परिक है कि उसकी सीमाकरण नही हो सकता ।

मैं ने इस बात का विश्वास कर लिया कि सत्य के बारे में छान बीन करने की आवश्यकता है चाहे जितना लमबा समय लगे ताकि में बहुमूल्य मोती तक पहुंच सकूं इस वासतो मैं ने अपना पूरा समय इस्लाम के पढ़ने में लगा दिया और इस्लाम के बारे में मैंने हर प्रकार की पुस्तक का अध्ययन किया । अंत में अंतिम संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीवनचरित्र का ध्यान पूर्वक अध्ययन किया । जब कि इस से पहले मैं इनके बारे में बहुत ही थोडा ज्ञान रखता था, हाँ इस बात का हमें पता था कि सारे के सारे ईसाई इस अंतिम महान संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नकारने पर सहमत हैं । इसी लिये में ने अपने मन में यह ठान लिया कि मैं उनके बारे में

बिना किसी विद्वेष तथा छल के अध्ययन करूँ। अतः बहुत ही थोडे समय में यह जान गया कि इस में कोई शंका नही कि अंतिम संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सत्य तथा अल्लाह के ओर निमंत्रण देने में सच्चे थे एवं उनका निमंत्रण भी सत्य था। तथा जो कुछ इस महान अंतिम संदेष्टा ने सारे मनुष्य के लिये प्रस्तुत किया है उसके पढ़ने के बाद यह मालूम हुवा कि इस से बढ़ कर कोई पाप एवं दोष नहीं कि इस ईश्वरभक्त मनुष्य को नकारा जाये।

अरब निवासी, मूरतियों के पुजारी,हर प्रकार के अपराध करने वाले,पशुता की जीवन बिताने वाले, बात बात पर मार काट करने वालों ने इसी अंतिम संदेष्टा की निमंत्रण से मनुष्यता सीखी, और हर पाप को छोड कर आपस में भाई भाई होकर अपने हाथों से बनाये मूर्तियों के रूप में झूठे ईश्वरों को तोड दिया तथा एक अल्लाह को मान कर उसके पुजारी हो गये.इस महान दूत की सेवा तथा महान कार्य को कोई गिन नहीं सकता। लेकिन आश्चर्य इस बात पर है कि सारे के सारे धर्म और विशेष रूप से ईसाई धर्म इस महान दूत की महिमा पर कीचड उछालते हैं। क्या यह दुख की बात नहीं है ?

मैने ध्यान पूर्वक मननचिन्तन किया तथा मैं मननचिन्तन कर ही रहा था कि मेरे पास मेरे एक हिन्दुसतानी मित्र मियाँ अमीरुद्दीन आये मैंने उन के साथ ईसाइयों के आस्था पर विवाद किया इस से मेर हृदय मे इस्लाम की महानता बैठ गई फिर मैं ने दृढ़ विश्वास कर लिया कि यही इस्लाम सत्य सरल,अवहेलना प्यार व महब्बत में निःस्वार्थता का धर्म है ।

मैं इस बात का आशा नहीं करता कि मैं अधिक दिन तक जीवित रहूंगा प्रन्तु जीवन का जो भी भाग बाकी बचा है उसको मैं इस्लाम की सेवा के लिये धर्मार्थ दान करूंगा ।

## मुहम्मद अमान होभोम
## MOHAMMD AMAN HOBHOM (2)

पाश्चात्य देश वाले क्यों इस्लाम स्वीकार करते हैं ?
इसके बहुत से कारण हैं | सब से बड़ा कारण यह है कि सत्य को सदा शक्ति एवं प्रभुत्व प्राप्त होती है,तथा इस्लाम के मौलिक आस्थायें सारे के सारे मानव बुद्धि एवं मानव स्वभाव के अनुसार हैं | इस्लाम ने जो मानव बुद्धि एवं मानव स्वभाव को आदर दिया है कोई सत्य का न्यास धारी खोजी बिना स्वीकार किये रह नहीं सकता |

उदाहरणतः आप एकेश्वरवाद आस्था को ले लें(जिसका अर्थ यह है कि केवल अल्लाह ही पूज्य है वह अपने सारे कार्य में अकेला है उसका कोई भागीदार नहीं तथा न ही उसका कोई रूप है, वह किसी के अधीनी नहीं सभी उसके अधीनी हैं,न उस से कोई पैदा हुआ तथा न उसे किसी ने पैदा किया,और न कोई उसका समकक्ष है|)इस आस्था से किस प्रकार मनुष्य की मर्यादा बढ़ती है | तथा किस प्रकार हमारी बुद्धि प्रलाप के पीछे चलने से स्वतन्त्र हो जाती है , अतः यह आस्था किस प्रकार लोगों के बीच समता की शिक्षा देती है इस लिये कि उन सब का पालनहार एक है और वे सारे के सारे

इसी एक पलानहार अल्लाह के दास हैं। इस्लाम प्रलोक के दिन पर विशवास का निमन्तरण देता है और प्रलोक एवं लेखा जोखी पर विश्वास मनुष्य को सारे पाप के कार्य को जड़ से उखाड़ फेंकने पर उभारता हैं क्यों कि मात्र अच्छाइयाँ ही सदा बाकी रहने वाली स्वर्गाय पदार्थ का मार्ग है। इसी प्रकार इस्लाम के आधार में से है कि हर मनुष्य अपने किये का पूरा पूरा फल पाये गा,तथा उसका बादशाहों के बादशाह,न्यायशील हर चीज के बारे में जानने वाले के सामने लेखा जोखी होगा, जिस से कण के समुतल्य पुण्य या पाप ढ़का छिपा न होगा,यह विश्वास हमको निमंत्रण देता है कि हम कोई भी पाप करने से पहले कई बार विचार करैं। निस्सन्देह मनुष्य पर इस अंतरात्मा की शक्ति का प्रभाव संसार के सारे फौजी शक्ति के प्रभाव से अधिक होगा।

विमुस्लिमों को इस्लाम के ओर खीचने वाली दूसरी चीजैं यह भी हैं!कि इस्लाम अवहेलना की आग्रह करता है। इस्लाम में प्रति दिन पाँच समय की नमाज़ मनुष्य को निरन्तरता सिखाता है। रमज़ान के रोज़े मनुष्य को श्वास पर नियंत्रण का अभ्यास्त बनाता है।

निस्सन्देह श्वास नियंत्रण एवं अभ्यास्त यह दोनों महान एवं सदाचारी मनुष्य की बड़ी विशेषता मेंसे है।

विशेष रूप से इस्लाम ही वह एकाका धर्म है जो अपने स्वीकार करने वालों को अभिवादन,स्वभाव की शिक्षा देता है, क्योंकि मुसलमान जहाँ कहीं भी हो वह इस बात पर विश्वास रखता है कि उसका पालनहार उसको देख रहा है तथा यह विश्वास उसको पाप करने से रोक देता है।

यह बात भी है कि मनुष्य स्वभावतः कल्याण पसन्द करता है और इस्लाम सब से बड़ी चीज़ जो लोगों को देता है वह है हृदयशान्ति. और यह किसी भी धर्म में नहीं है।

मैं ने बहुत से समाज में जीवन बिताया है तथा बहुत सारे जीवनसिद्धांत एवं राजनैतिक सिद्धांत को पढ़ा है प्रन्तु मैं जिस परिणाम पर पहुंचा हू वह यह है कि इस्लाम ही में सन्तुष्ट जीवन व्यतीत करने के लिये पूचर्ण सिद्धान्त है इसी कारण सभी लोग इस्लाम स्वीकार कर रहे हैं।

इस्लाम कुछ सिंद्धातों का नाम नहीं है बल्कि यह व्यावहारिक रीति है मात्र संस्था रीति नहीं है, बल्कि अल्लाह की चाहत तथा उसकी शिक्षाओं के लिये विनीति है। जो किसी भी धर्म में नहीं है।

# मुराद होफमान (3)

मुराद होफमान जरमनी के रहने वाले हैं. इनहों ने विधिझ में पी.एच.ड़ी.हाड़ वाड़ विश्व विधालय से किया | और जरमन के राजदूत भी थे |

एक बार इनका गाड़ी से भयानक घटना हुआ| तो अस्त्र चिकित्सा के बाद अस्त्रचिकित्सक ने इन से कहा कि इस प्रकार के घटना में वास्तव में कोई बचता नहीं है | और ऐ मेरे प्यारे ! अल्लाह ने आप के वासते कोई बहुत ही विशेष चीज़ संचयकारी किये हुए है | यह ईसाई थे बाद में इन्हों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया | तथा इस विषय पर बहुत सारी पुस्तकें लिखीं | इनके इस्लाम स्वीकार करने के बाद विभिन्न प्रकार के पत्र प्रतिनिधियों एवं पत्रकारों ने समाचार पत्र , रेड़ियों आदि में बहुत सारे परोपगंड़े किये तथा उनके इस कार्य को बहुत ही उछाला प्ररन्तु इन पर कोई प्रभाव न पड़ा. बल्कि और ही इस्लाम में शकित्शाली होते गये |

इस्लाम की आवाहन कम होने के पश्चात संसार में बहुत ही तेज़ी के साथ इस्लाम के फैलने तथा लोगो के स्वीकार करने के कारण बाताते हुए उन्हों ने कहा है कि :

इस्लाम का तेज़ी के साथ फैलना उसकी निशानियों में से एक निशानी है, और यह इस कारण कि इस्लाम संमपूर्ण धर्म है जो साक्षात्कार की शक्ति रखता है. तथा उसकी विशिष्टताओं में से है कि उसने शिक्षा प्राप्त करने को जरूरी  किया है ,और शिक्षा उपासना है ००००

और होफमान पाश्चात्य देश के लोगों के बारे में आश्चर्य होकर कहते हैं कि पाश्चात्य देश वाले आज तक  बक़रीद में मुसलमानों के पशु बलिदान देने को हस्त्रिपशु कहते हैं जबकि आज तक वे अपनी नमाज़ का नाम बलिदान ही देते हैं, तथा बराबर शुक्रवार के दिन सोग मनाते हैं क्योंकि पालनहार ने अपने पुत्र को हमारे वासते बलिदान कर दिया है.(पशु का बलिदान देना हस्त्रिपशु है और अपने पुत्र को बलिदान करदेना उनका असल धर्म है)

# यूसुफ इस्लाम (4)

मैं अपने इस्लाम स्वीकार करने की कहानी बताना चाहता हूँ। आप सारे लोग यह जानते हैं कि अल्लाह ने भूतल पर हम सब को प्रतिनिधि बनाया है। तथा हमारे वासते ईशदूतों को भेजा तथा अन्त में हमारे संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहुअलैहिवसल्लम को ताकि वह हमैं सीधा मार्ग दिखायें। और हर मनुष्य पर आवश्यक है कि वह इस प्रतिनिधि के विषय पर ध्यान दे तथा आने वाली सदा जीवन(प्रलोक दिन) के लिये अपने वासते कुछ जमा करले।

क्यों कि जिस से यह अवसर खो जायेगा पुनः नहीं पाये गा। जैसा कि शुभ कुर्आन मे है। --- काश कि आप देखते जब कि पापी लोग अपने पालनहार के समक्ष सिर झुकाये हुए होंगे, कहेंगे कि हे हमारे पालनहार!हम ने देख लिया तथा सुन लिया, अब तू हमें वापस लौटा दे तो पुण्य के कार्य करेंगे, हम विश्वास वाले हैं। तथा यदि हम चाहते तो प्रत्येक व्यक्ति को मार्गदर्शन प्रप्त कर देते, परन्तु मेरी यह बात पूर्णताःसत्य हो चुकी है कि मैं अवश्य नरक को मनुष्यों तथा जिन्नों से भर दूँगा। अब तुम अपने उस

दिन के मिलन को भूल जाने का स्वाद चखो,हमने भी तुम्हें भुला दिया अपने किये हुये कर्मों के दुष्परिणाम से स्थाई यातना का आनन्द लो --- | (सूरह सजदह १२,१३,१४)दूसरे अस्थान पर इस प्रकार है--- वे लोग उस में (नरक में)चिल्लायेंगे कि हमारे पालनहार ! हमको निकाल ले हम अच्छे कर्म करेंगें उन कर्मों के विपरीत जो किया करते थे. (अल्लाह कहेगा ) कि क्या हमने तुम्हें इतनी आयु नहीं दी थी कि जिसको समझना होता वह समझ सकता तथा तुम्हारे पास डराने वाला भी पहुँचा था तो स्वाद चखो कि (ऐसे) अतयाचारियों का कोई सहायता करने वाला नहीं है --- |

मैं एक धनवान घर में जो ईसाई धर्म के मानने वाले थे पैदा हुआ,मैंने भी अपने माता पिता का धर्म पढ़ा जैसा कि हमें मालूम है कि हर बालक स्वभाव पर जन्म लेता है.परन्तु उसके घर वाले उसको मजूसी बना देते हैं या यहूदी ,इसी कारण मुझे यह कह कर कि यही वह धर्म है जिसपर मेरे पिता ने हमको पाला पोसा है | ईसाई बना दिया गया तथा मैं ने यह सीखा कि अल्लाह मौजूद है परन्तु बिना किसी सम्बन्ध के उससे सम्पर्क नहीं हो सकता और बिना ईसा मसीहह के सम्बन्ध के उस तक पहुँचा नहीं जा सकता

अतः ईसा मसीहह ही केवल अल्लाह तक पहुंचने के लिये दरवाजह हैं। मैं इस बात से बहुत ही कम संतुष्ट था और मेरी मानव बुद्धि इसे स्वीकार नहीं करती थी।

मैं संदेष्टा ईसा मसीह की मूर्ती के ओर देखता तो मैं उसको पत्थर के सिवाये कुछ नहीं पाता जिसमें पराण नहीं है। इसी प्रकार त्रीश्वरवाद की सोच से में काफी ब्याकुल रहता था फिर भी अपने पिता के धर्म का आदर करते हुये मैं विवाद नहीं करता।

फिर मैं धीरे धीरे अपने धारमिक विकास तथा उसके विभिन्न आस्थावों से दूर होने लगा और में गानविद्य एवं गान में अभिरूचि लेने लगा तथा मैं एक प्रसिद्ध गायक बनने का सपना देखने लगा। और इस चमतकार जीवन ने मुझे अपने बाहों मे इस प्रकार दबोच लिया कि यही मेरा प्रभू हो गया तथा अपने एक मामू की तरह मैं ने धन को अपना अभिप्रेत बना लिया कि किसी प्रकार धनवान होना है। इसका कारण वह समाज है जिसमें मेरा जन्म हुआ क्यों कि दुन्यादारी ही उनकी सब कुछ थी तथा यही उनका प्रभू था।

अब मेरा पूरा का पूरा ध्यान धन पर लग गया तथा पूर्ण रूप से मैं धन के बटोरने में लग गया। और

मैं ने बहुत सी संगीत कही | प्रन्तु मेरे हृदय में निर्धनों की सहायता की इच्छा थी और मैं यह कार्य करता रहा फिर भी जैसा कि शुभ कुर्आन में है मनुष्य लालची होता है चाहे जितना उसे दे डालो |
मैं अपने उद्देश्य में सफल रहा तथा अभी मैं १९वर्ष ही का था कि मेरी जगत्प्रसिद्धि सारे समाचार पत्र में आगई.तथा लोगों ने मुझे हाथों हाथ ले लिया |

धन तथा समुन्नत जीवन में सफलता एवं जगत्प्रसिद्धि प्राप्त करने के एक वर्ष के बाद मैं सिल की बीमारी के कारण आरोग्यशाला में भरती हो गया | इसी बीच मैं अपनी हालत तथा जीवन के बारे में यह चिनतन करने लगा कि क्या मैं मात्र शरीर हूं ?तथा क्या मैं इस शरीर को सुशील कर सकता हूँ ? अतः यह घटना अल्लाह के ओर से प्रसाद था कि हमें अपनी हालत के बारे में सोचने एवं सत्य पर आँख खोल कर सत्य के ओर पलटने का अवसर मिला | मेरे बुद्धि में यह प्रश्न बार बार उठता था कि मैं इस बिस्तर पर क्यों सोया हूँ ? तथा इस प्रकार बहुत से प्रश्न थे जिनका मैं उत्तर खोजता था | इस समय वहाँ पूरबी एशिया की आस्थायें फैली हुई थीं | अतः मैं इन आस्थाओं के विषय में पढ़ने लगा | और पहली बार मैं

मृत्यु के बारे में मानव चिन्तन करने लगा | तथा मैं नें यह जान लिया कि प्राण दूसरी जीवन के ओर स्थानांतरित होगी ,केवल संसार के जीवन पर निर्भर नहीं है | इस समय हमैं यह अनुभूत होने लगा कि पथ पर्दशन के आरंभ मार्ग पर हूँ | तथा मैं ध्यान पूर्वक मानव चिन्तन करने लगा और इस परिणाम पर पहुंच गया कि मैं मात्र शरीर नहीं हूँ |

एक दिन मैं चल रहा था कि अचानक वर्षा होने लगी जिस से बचने के लिये मैं दौड़ने लगा कि हमैं वह बात याद आगई जिसे मैंने इस से पहले सुना था | कि शरीर उस गदहे के प्रकार है जिसकी शिल्पिक आवश्यक है ताकि उसका मालिक जहाँ चाहे ले जाये वरना गदहा अपने मालिक को जहाँ चाहेगा ले जाये गा प्रन्तु मैं संकलप वाला मनुष्य हूँ मात्र शरीर नहीं हूँ | जैसा कि पूरबी आस्थाओं के पढ़ने से हमैं पता चला,अतः पूर्ण रूप से मैं ईसाई धर्म से निराश हो गया | स्वास्थ्य पाने के बाद दोबारह गाने बजाने में लग गया फिर भी मेरी गानविद्या मेरे नये सोच के ओर भागने लगी |

मैंने बहुत सी गीत कही उसी समय मैंने एक गीत कही जिसका विषय था (अल्लाह की पहचान का मार्ग) और संगीत एवं गानविद्या मेरी प्रसिद्धि बढ़ती

गई.प्रन्तु भीतर ही भीतर मैं सत्य के खोज में था । इसी स्थल में मेरा आतमा बुद्धिष्ट धर्म से सन्तुष्ट हो गया कि हो सकता है यह अच्छा एवं समुन्नत आस्था हो । प्ररन्तु मैं संसार सन्नयास ले कर केवल उपासना में लग जाना नही चाहता था । इस लिये कि मैं संसार के माया से चिम्टा हुआ था और साधुत्व की कुटी में एकांतवास हो कर रहना नहीं चाहता था ।

इसके बाद मैं अपना खोया हुआ निधि विभिन्न प्रकार से खोज रहा था । उस समय इस्लाम के बारे में मैं कुछ नहीं जानता था । प्रन्तु इस्लाम के बारे में जानकारी जिस प्रकार हुई उसको मैं चमत्कार समझता हूं । हुआ यह कि मेरे भाई ने फिलिसतीन का यात्रा किया और वहाँ मस्जिद अक़्सा में जो आध्यात्मिक ,आंतरिक चहल पहल देखा जो कि यहूदियों के पूजा स्थानों में कभी भी पाया नहीं जाता बहुत ही अधिक विस्मित लौटा ।

मेरा भाई वहाँ से एक शुभ अनुवादक कुर्आन लेकर आया और वह स्वयं इस शुभ पुस्तक में बिना इस्लाम स्वीकार किये विचित्र चीज अनुभूत किया और सोचा कि हो सकता है कि मैं इसमें अपना खोया हुआ निधि पाजाऊँ ।

जिस समय मैंने इस शुभ कुर्आन को पढ़ा तो उस में मैंने पथ प्रर्दशन पाया । कुर्आन ने हमें हमारे पैदा किये जाने की वास्तविकता तथा जीवन का उद्देश्य बताया तथा यह पता चला कि मैं कहाँ से आया हूँ । उसी समय हमें यह विश्वास हो गया कि यही सत्य धर्म है । अतः इस धर्म की वास्तविकता पच्छमी लोगों की सोच से अलग है । और यह व्यावहारिक धर्म है और श्रद्धालु चीज नहीं है कि हम उसे बूढ़े होते समय प्रयोग करैं । हमें यह भी ज्ञान हुआ कि पराण एवं शरीर दोनों अलग नहीं होते तथा हमारे ऊपर आवश्यक है कि हम अल्लाह की इच्छा के लिये विनीति अपना लें । और उच्चता एवं प्रगति के लिये केवल यही एक मार्ग है । और इसी समय इस्लाम के स्वीकार करने के लिये मेरी इच्छा अचल हो गई ।

उसी समय से मैं यह जानने लगा कि हर चीज अल्लाह की रचना है और उसी की बनाई हुई है । तथा अल्लाह ही सत्य पूज्य है जिसके सिवाय कोई अराध्य नहीं जो जीवित है एवं सबका सहायक आधार है,जिसे न ऊँघ अती है न निद्रा, तथा उसी समय से मैं अल्लाह का नकारना छोड़ने लगा इस लिये कि मैं अपने रचियता को पहचान गया । तथा अपने पैदा किये जाने

का उद्देश्य भी | और वह है पूर्ण प्रकार से अल्लाह की शिक्षाओं को ह्रदय से स्वीकार कर लेना तथा उसके आधार पर जीवन बिताना | इसी को इस्लाम कहते हैं |

कुर्आन पढ़ने से हमें यह भी ज्ञान हुआ कि अल्लाह ने सारे ईश्वरसंदेष्टाओं को एक ही संदेश दे कर भेजा है | कि केवल एक अल्लाह की पूजा करो तथा उसी को पूज्य मानो तो फिर क्यों यहूदी और ईसाई विभेद करते हैं ? हाँ यहूदियों ने ईसा को नही स्वीकार किया क्यों कि उन लोगों ने उनकी बात में परिवर्तन किया प्रन्तु आश्चर्य तो यह है कि ईसाइयों ने भी ईसा के संदेश को नही समझा और उनको अल्लाह का पुत्र मान लिया |

प्रन्तु कुर्आन हमको आवाहन करता है कि हम माननचिन्तन करैं और सोचैं तथा हम सूर्य ,चंद्र की पूजा न करैं बल्कि उस रचयिता,विश्वकर्ता की पूजा करैं जिस ने हर चीज रचा है और पैदा किया है | अतः कुर्आन ने सारे मनुष्यों को सूर्य ,चंद्र एवं अल्लाह की सारी सृष्टि के बारे में चिन्तन करने का आदेश दिया है | तो क्यिा कभी हमने ध्यान दिया कि सूर्य किस प्रकार चंद्र से निभिन्न है ? भूतल से दूरी में दोनों के निभिन्न होने पर भी लगता है कि दोनों की दूरी एक है तथा

कभी कभार ऐसा लगता है कि एक दूसरे को छाजाये गा | सच अल्लाह पवित्र है | जिस समय विस्तृतभूमि में जाने वाले गये तथा विस्तृतभूमि के प्रतियोगिता भूतल की छुटाई देखी तो अल्लाह पर विश्वास करलिया क्यों कि उन लोगों ने अल्लाह की शक्ति तथा उसकी निशानी देख ली |

जिस प्रकार मैं कुर्आन को पढ़ता गया नमाज़, धर्मादाय, अच्छा व्यवहार , के बारे में भी बहुत कुछ जान गया | तथा इसके बाद भी मैं इस्लाम स्वीकार न करता प्रन्तु मैं ने जान लिया कि कुर्आन ही मेरा खोया हुआ निधि है|तथा अल्लाह ने उसको मेरे लिये भेजा है | फिर भी अपने दिल की बात को छुपा कर रख्खा किसी से न कहा |

उसी समय मैं अपने भाई की तरह फिलिस्तीन जाना चाहा | मैं एक मस्जिद में बैठा ही सोच रहा था कि अचानक एक आदमी ने पूछा तुम क्या चाहते हो ? तो मैंने उसे बता दिया कि मैं मुसलमान हूँ | इसके बाद उस ने मेरा नाम पूछा जिस पर मैं ने कहा मेरा नाम सतीफन्स है ,उस आदमी को इस से बहुत ही आश्चर्य हुआ | अतः मैं नमाज पढ़ने वालों के साथ मिल गया | तथा जिस प्रकार हो सका उन्हीं लोंगो की तरह करने

लगा | लन्डन वापसी के बाद मेरी भेंट एक मुसलमान बहन से हुई जिसका नाम नफीसह था तो मैं ने उसे अपने ह्रदय की बात बता दी कि मैं इस्लाम स्वीकार करना चाहता हूँ | तो उसने हमको न्योरीजन्ट मस्जिद जाने के लिये कहा , यह लग भग कुर्आन पढ़ लेने के एक वर्ष छ महीने के बाद १९७७ की बात है | तथा उसी समय हमको यह विश्वास हो गया कि हमैं अपनी अभिमान एवं शैतान से परमपद प्राप्त करके एक दिशा के ओर चलना आवश्यक है | फिर शुक्रवार के दिन नमाज के बाद मैं इमाम से नजदीक हुवा तथा उसके सामने अपने इस्लाम का प्रचार करदिया | प्रसिद्धिता एवं धनमान होने के बावजूद हमको यह निर्देश कुर्आन ही से मिला | अब मैं ईसाइयों तथा दूसरे धर्म वालों के प्रतिबिम्ब सीधे अल्लाह से अपना समपर्क बना सकता हूँ | क्यों कि हमको एक बार एक हिन्दू महिला ने बताया कि हम केवल एक अल्लाह की ईश्वरत्व पर आस्था रखते हैं प्रन्तु इन मूर्तियों का प्रयोग केवल अल्लाह तक पहुंचने के लिये करते हैं | उसकी इस बात का अर्थ यह हुवा कि अल्लाह तक पहुंचने के लिये किसी न किसी माध्यम का होना आवश्यक है | प्रन्तु इस्लाम ने इन सारी रुकावटों को समाप्त कर दिया|

और केवल एक चीज है जो मुसलमान तथा विमुस्लिमों में अंतर कर देती है वह नमाज है। जो अध्यात्मिकता की पवित्रता के लिये केवल एक मार्ग है।

अन्त में मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैं अपने सारे कार्य अल्लाह के लिये करना चाहता हूँ तथा अल्लाह से प्राथना करता हूँ कि मेरे इस्लाम स्वीकार करने की यह कहानी हर पढ़ने वाले के लिये भयोत्पादक बने। यहाँ यह भी कहता हूँ कि इस्लाम स्वीकार करने से पहले मैं ने किसी भी मुसलमान आदमी से संमपर्क नहीं किया केवल मैं ने कुर्आन पढ़ा तो मैं ने इस्लाम को सम्पूर्ण पाया। और अगर हम कुर्आन तथा अन्तिम ईश्दूत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की शिक्षा अनुसार अपनी जीवन व्यतीत करेंगे तो इस संसार में सफल होंगे। अल्लाह हम सब को अपने ईश्दूत के मार्ग को अपनाने का अवसर दे।

## मोरीस बुकाय (5)

मोरीस बुकाय फराँस के बासी थे। उनका धर्म नसरानी था। तथा यही धर्म उनके माता पिता का भी था। फराँस विश्व विद्यालय से चिकित्सा शास्त्र का प्रमाणपत्र प्राप्त किया,और इतना प्रसिद्धि हुये कि फरांस में सब से बड़े कुशल अस्त्रचिकित्सक के नाम से जाने जाते थे। उनके धर्म परिवर्तन में कुशलता एक आशचर्य कहानी है जिसने उनके हृदय का संसार बदल दिया,तथा उनकी जीवन बदल गई।

फराँस के बारे में यह प्रसिद्धि है कि वह पुरातत्व का सब से अधिक तत्वावधान करने वाला देश है, जिस समय फराँस का प्रधान मंत्री फराँसू मीटारान १९८१ में हुवा तो उसने मिस्र से मिस्र के फिरऔन की लाश माँगी ताकि उस पर कुछ चिकित्सा अनुमान किया जाये, अतः फिरऔन की लाश फराँस लाई गई और सिज समय यह लाश फराँस के हवाई अड्डा पर विमान से उतरा तो फराँस के प्रधामन मंत्री ने उसका इस प्रकार स्वागत किया कि लगता था फिरऔन जीवित है तथा अब भी चीख रहा है कि मैं तुम सब का सब से बडा पालनहार हूँ।

अतः शव फ्रांसा के पुरातत्व सेन्टर लेजाया गया तकि बड़े बड़े अस्त्रचिकित्सक उसके बारे में गवेषणा करैं तथा अस्त्रचिकित्सकों के प्रधान मोरीस बुकाय थे | गवेषणा में मोरीस बुकाय का ध्यान इस पर था कि यह पता लगाया जाये कि इस फिरऔन का देहाँत कैसे हुवा है जब कि दूसरे लोग कुछ और ही गवेषणा कर रहे थे | रात के अन्तिम समय में यह पता चला कि यह जलमग्न हो कर मरा है क्यों कि उसके शरीर पर कुछ समुन्द्री नमक का भाग बाकी था | साथ ही साथ यह भी पता चला कि उसकी लाश डूबने के कुछ ही समय बाद निकाली गई है | प्रन्तु आश्चर्य बात यह है कि दूसरी फिरऔनी लाशों के अलावह इसकी लाश केवल इस प्रकार सुरक्षित क्यों बाकी है जब कि सारी लाशैं समुंद्र से निकाली गई हैं ?

मोरीस बुकाय सारे गवेषणा की प्रतिवेदन लिख रहे थे कि अचानक एक आदमी ने उनके कान में चुपके से कहा कि जल्दी न करो मुसलमान लोगों का कहना है कि वह जलमग्न होकर मरा है | प्रन्तु मोरीस ने इस सूचना को बिल्कुल नकार दिया तथा अश्चर्य में पड़ गए कि इस प्रकार का ज्ञान बड़ी मशीनो से गवेषणा करने के बाद ही हो सकता है | फिर उसी आदमी ने

कहा कि वह कुर्आन जिस पर मुसलमान विश्वास करते हैं उसमें इसके जलमग्न होने तथा इसकी लाश के सुरक्षित रहने का वर्णन आया है । इस से उनका आश्चर्य और ही बढ़ गया तथा लोगों से पूछने लगे । कि यह कैसे हो सकता है ? जब कि इस लाश का गवेषणा लग भग दो वर्ष पहले १८९८में हुवा है जब कि उनका कुर्आन १४०० सो सला पहले से है । यह बात बुद्धि में कैसे आ सकती है ? जब कि केवल अरब ही नहीं बल्कि सारे के सारे मनुष्य कुछ वर्ष पहले मिस्र के पुराने लोग अपने फिरऔनों पर हुनूत लगाना जाने हैं ।

मोरीस बुकाय पूरी रात बैठ कर ध्यान पूर्वक अपने मित्र की बात को सोचते रहे कि मुसलमानों के कुर्आन में डूबने के बाद इस लाश के बचने का वर्णन आया है । जब कि तौरात में यह है कि फिरऔन उस समय डूबा है जब मूसा को भगा रहा था । और उस में उसकी लाश के बारे में कोई चरचा नहीं है । अतः मोरीस अपने ह्रदय में कहने लगे कि क्या यह बात बुद्धि में आने वाली है कि यह मेरे सामने जो लाश है यह वही मिस्र का फिरऔन है जिसने मूसा को भगाया था ? तथा क्या यह बात बुद्धि में आने वाली है कि

मुसलमानों का मुहम्मद यह बात एक हजार वर्ष से अधिक पहले जान जाये ? और मैं अब जान पाया हूँ ।

मोरीस सो न सके तथा तौरात मंगाया । और तौरात में पाया कि जल ने फिरऔन की सारी सेना को लपेट लिया और उन में से कोई न बचा.. प्रन्तु मोरीस को बराबर आश्चर्य रहा कि पुरे तौरात में कहीं भी इसकी लाश के ठीक ठाक बच जाने का वर्णन नहीं मिलता है ।

फिरऔन की लाश को चिकित्षा एवं सुधार के बाद फराँस ने फिरऔन के वैभव के अनुसार शीशे के ताबूक में भेज दिया । प्रन्तु मोरीस को उस बात के कारण जो उन्हों ने फिरऔन की लाश के बारे में मुसलामानों के ओर से सुना था चैन न आया । इसी कारण संबल की तय्यारी करके सऊदी अरब में एक चिकित्षा महान सम्मेलन में भाग लेने के लिये जिस में बहुत से मुसलमान शव परीक्षा करने वाले भी भाग लिये थे यात्रा किया । वहाँ पर सब से पहले मोरीस ने फिरऔन की शव के बारे में जो खोज लगाया था उसी का चरचा किया । तुरंत एक मुसलमान ने कुर्आन खोल कर ईश्वरीय वाणी दिखाया :

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خَلْفَكَ آيَةً وَإِنَّ كَثِيراً مِنَ النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا لَغَافِلُونَ) (يونس:९२)

( तो आज हम तेरे शाव को छोड़ देंगे ताकि तू उन लोगों के लिए शिक्षा का चिन्ह हो जाये जो तेरे पश्चात है | तथा वस्तुतः अधिकाँश लोग हमारे प्रमाण चिन्हों से विमुख हैं ) (सूरह यूनुस ९२)

कुर्आन की इस आयत का मोरीस पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा तथा हृदय में इस प्रकार आवेश पैदा हुवा कि सारे लोगों के सामने खड़े हो कर निःसंकोच हो कर घोषणा कर दिया कि मैं ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया तथा इस कुर्आन पर विश्वास कर लिया |

मोरीस फराँस बदल कर आये तथा लग भग दस वर्ष तक बिना किसी दूसरे कार्य के इस गवेश्वास में लग गये कि आज के समय के नए वैज्ञानिक सिद्धांत एवं अनुसाधान कुर्आन से कितना मेल खाते हैं | तथा कुर्आन के बयान किये हुये एक ही विज्ञानिक गवेषणा के बारे में कितना पारस्परिक है जान सकैं | ताकि कुर्आन की इस आयत का परिणाम उन्हें मिल सके |

(لا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلا مِنْ خَلْفِهِ تَنْزِيلٌ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ)
(فصلت:टछ)

(जिस के पास असत्य फटक भी नहीं सकता न उसके

अगे से तथा न उसके पीछे से यह है अवतारित की हुई हिक्मत वाले एवं गुणों वाले (अल्लाह )की ओर से) कुछ ही वर्षों के बाद जिन्हें मोरीस ने फराँस में बिताया कुर्आन के बारे में एक पुस्तक लिखी जिस से पूरे पच्छमी देश तथा उसके विज्ञानिकों को हिला दिया। इस पुस्तक का नाम था कुर्आन, तौरात,इन्जील एवं ज्ञान नई मर्म के अनुसार पवित्र पुस्तकों पर गवेषणा (कुर्आन और नया चैलेंज) इस पुस्तक ने क्या किया?जैसे ही पहली बार छपा सारे पुस्तकालय से तुरन्त समाप्त हो गया।फिर असली भाषा फराँसीसी से अरबी, इन्गलिश, इन्ड़ोनेसी,फारसी,तुरकी,उर्दू,गुजराती, अलमानी आदि भाषा में अनुवाद होकर पनः छापी गई ताकि पूरब पच्छिम सारे पुस्तकालय में उपलब्ध हो जाये।

यहाँ यह बात भी याद रहे कि मोरीस की इस पुस्तक पर यहूद तथा नसरानी धर्म के सारे विज्ञानों ने खणडन करने तथा उत्तर देने का प्रयास किया प्रन्तु किसी ने भी कोई ग्राह्य पुस्तक न लिखी। यहाँ तक कि अन्त में डाक्टर वलेम कामेल ने प्रयास किया और ज्ञान एवं तिथि के अनुसार कुर्आन तथा पवित्र पुस्तकैं,,के नाम से एक पुस्तक लिखी इसमें दायें बायें बहुत चक्कर लगाया प्रन्तु कोई विशेष बात न लिख सके।

इस से आश्चर्य की बात यह है कि अरब के कुछ विज्ञानिक ने भी खणडन करने की प्रयास की प्रन्तु जब मोरीस की पुस्तक को ध्यान पूर्वक पढ़ने लगे तो मुसलमान हो गये ।
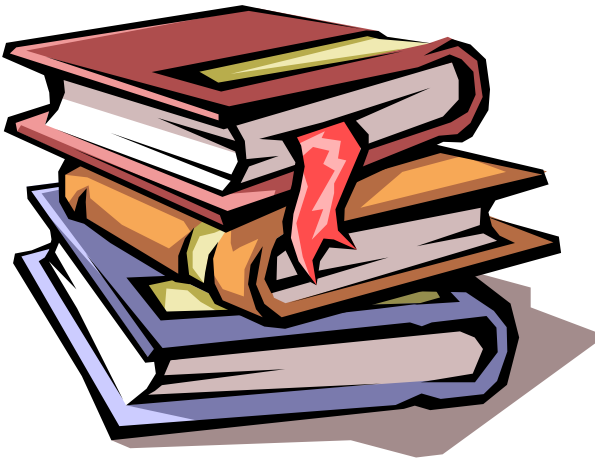
## मुहम्मद असद (6)

लिव बोल्ड फायस नमसावी( मुहम्मद असद ) यहूदी धर्म के मानने वाले थे | फीना विश्व विधालय में शास्त्र एवं दर्शनशस्त्र पढ़ा फिर पत्रकार बने तथा उसमें बहुत प्रसिद्धि हुए|और पूर्व इस्लामी अरब में पत्रराचारण हुये | बहुत दिनों तक फिलिसतीन में रहे | फिर क़ाहिरा का यात्रा किया तथा वहाँ इमाम मुस्तफा मुरागी से मिले| तथा उनसे बहुत से धर्मों के बारे में बात चीत की | अन्त में बात इस पर गई कि इस बात का आस्था कि इस्लाम में प्राण और शरीर मनुष्य की जीवन के लिये दो जुड़वा के चेहरे के प्रकार हैं जिसे अल्लाह ने पैदा किया है | फिर अज़हर ही में अरबी भाषा की शिक्षा प्रप्त करने लगे | अभी तक वह यहूदी ही थे |

लिव बोलड फायस सत्य के खोजने वाले तथा एक दूसरे से प्रश्न करने वाले मनुष्य थे | पिछड़े मुसलमान एवं उनके धर्म की वास्तविकता के बीच जो दूरी है उसके समूह काफी आश्चर्य में थे | एक दिन की बात है कि वह कुछ मसलमानों के पास इस्लाम की ओर से निवाण करने के लिये गये तथा उन्हों ने मुसलमानों पर पीछे रहने का आरोप लगाया | क्यों कि

वे इस्लाम से पीछे हैं | अचानक एक अच्छे मुसलमान ने उनकी बात सुन कर कहा कि आप तो मुसलमान हैं| प्रन्तु आप जानते नहीं हैं ! इस पर फायस यह कहते हुये हंसे कि मैं मुसलमान नहीं हूँ | प्रन्तु इस्लाम में मैंने जो सौन्दर्य देखा है उसे सोच कर जब मुसलमान को इसे खोता देखता हूँ तो बहुत ही क्रोध होता हूँ | लेकिन वह बात जो मुसलमान ने कही थी कि आप तो मुसलमान हैं उनके ह्रदय में बैठ गई तथा उनके भीतर खल बली मचा दी | तथा उसको उन्हों ने अपने सामने रख लिया  एक दिन आया कि वह मुसलमान हो गए |

फायस अपने इस्लाम स्वीकार करने का कारण निम्न लिखित बातैं बताते हैं

✧ इस्लाम इस प्रकार समपूर्ण धर्म है कि उसको बयान नहीं किया जासकता |

✧ इस्लाम बराबर मनुष्य को जीवन के सारे भाग एक जैसा बनाने का आज्ञा देता है |

✧ इस्लाम संसार एवं प्रलोक के दिन तथा पराण एवं शरीर ,अद्वितीय,समाज को एक जैसा महत्व देता है | तथा हमै सिखाता है कि अपने भीतर पाई जाने वाली

शक्ति से लाभ उठाऐं। और जो मनुष्य इस धर्म को ले कर आया है वह महान पथप्रदर्शक है।

✧वह मनुष्य जो भेजा गया वह सारे संसार वालों के लिये कृपा है उसके पथप्रदर्शक को नकराना अल्लाह की कृपा का नकारना है।

✧ इस्लाम कोई दर्शनशास्त्र नहीं बल्कि जीवन रीत है सारे धर्मों में केवल इस्लाम इस बात का घोषणा करता है कि संसार की जीवन में अकेले कौशल प्राप्त किया जासकता है। साथ ही साथ इस्लाम यह नहीं कहता कि यह कौशल शरीर की सारी शक्ति समाप्त करने के पश्चात प्राप्त हो सकता है। इसी प्रकार सारे धर्मों में मात्र इस्लाम वह धर्म है जो मनुष्य को यह अवसर देता है कि वह बिना अपनी हार्दिक रूची को एक मिनट के लिये भी खो कर अपनी जीवन से संपूर्ण लाभ उठा सकता है। इस्लाम में परलोक में सफलता प्राप्त करने के लिये संसार को हीन समझने की प्रतिबन्ध नहीं है। इस्लाम में यह भी है कि आप अपनी जीवन से दूसरों को पूरा पूरा लाभ पहुँचायें। तथा मुसलमान पर अवश्यक है कि अल्लाह की ओर से दी गई पदार्थ का पूरा प्रयोग करके इस जीवन को सम्मान दे तथा आदम

के पुत्रों की उनके हार्दिक,समाजिक एवं भौतिक प्रयासों मे सहायता करे,आदि ।

यह तथा इस प्रकार की इस्लाम की बहुत सी विशेषताओं एवं अच्छाइयों को देख कर तथा इस्लाम का अनुशीलन करके और इस्लाम का अन्य अनेक धर्मों से तुलना करके इस्लाम स्वीकार किया । और बहुत सी पुस्तकें भी लिखीं ।
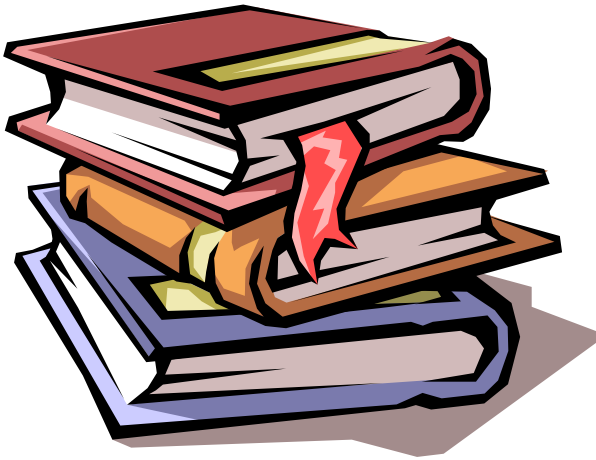
## ड़ा॰कमला दास (7)

ड़ा॰कमला दास केरला राज्य के एक सज्जन महिला स्रसिद्धि हिन्दी कवि एवं अच्छे लेखक हैं जिन्हों ने ११दिसम्बर १९९९ में इस्लाम स्वीकार किया । और अपना नाम सुरय्या चुना ।

इन्हों ने अपने इस्लाम स्वीकार करने का घोषणा उस समय किया जब अरनाकुलम में एक पुस्तकालय की सभा उदघाटन कर रही थीं । इन्हों ने इस्लाम स्वीकार करने के कारण इस प्रकार बतलाया कि :

मैं हिन्दुओं के प्रकार यह नहीं चाहती हूं कि मुझे जलाया जाये । यही मेरे इस्लाम स्वीकार करने का महत्व कारण है , मैं विधवा हूँ. मेरे पुत्र मेरे संग नहीं हैं । मैं इस महान धर्म को स्वीकार करके प्रिय होना चाहती हूँ । इस्लाम धर्म के बारे में मेरे पास नवीन्तम अभीवयत्कि हैं । कि मात्र इस्लाम ही प्रीति का धर्म है । मात्र यही वह धर्म है जो महिलाओं की रक्षक एवं समर्थक है । मैं अनाथ हूँ । मेरा कोई समीपवर्त्ती नहीं है हिन्दुऔं की मूर्तियाँ जिनकी वे पूजा करते हैं । तथा उसके बारे में कहते हैं कि वे पूज्य हैं और वे पूजने वालों का देख रेख करते हैं अल्लाह पापों को क्षमा

करता हैं तो मुझे क्षमा करने वाला पालनहार चाहिये। इसके अतिरिक्त उन्हों ने कहा कि मैं बहुत दिनों से इसके बारे में विचार कर रही थी । मेरे संतान यह न सोचैं कि मैं मितृ के बाद उनके पास कव्वा के रूप में लौट आऊँगी। जैसा कि हिन्दुओं की प्रलाप एवं अस्था है। यह रमज़ान का महीना मेरे मुसलमान होने का सब से उचित महीना है सारे के सारे गवाह रहो मैं मुसलमान हो गई हूँ। जब कमला से यह प्रश्न किया गया कि उन्हें इस काम पर जब लोगों का प्रतिक्रिया हो गा तो क्या करैंगी ? इस पर उन्हों ने उत्तर दिया कि मुझे किसी के प्रतिक्रिया या अलोचना की कौई चिन्ता नहीं है यह मेरा अपना निर्णय है तथा मैंने अपने कमरे से हिन्दुओं की हर मूर्ती को फेंक कर उन से कह दिया है कि तुम लोग अपनी मूर्तियाँ ले लो हिन्दू धर्म से मैं ने दुख के सिवाय कुछ नही पाया ।

# हुसैन रऊफ़
## Hussin Rofe (8)

जिस समय अपने माता पिता का धर्म छोड़ कर कोई दूसरा धर्म स्वीकार करते हैं तो साधारणतः इसका कारण समाजिक,तत्तववेत्ता, ममत्व के आधार पर होता है। मेरे स्वभाव ने भी एक ऐसे धर्म के खोज पर उभारा जो मेरे तत्तववेत्ता एवं समाजिक प्यास को बुझा सके। इस वासते मैं ने यह ठान लिया कि संसार में पाये जाने वाले सारे प्रसिद्धि धर्मों के बारे में ध्यान पूर्वक छान बीन करूँ। तथा उनकी निमंतरण एवं पुस्तकें और प्रभाव पढ़ूँ। मैं एक यहूदी दूसरे कैथोलिक माता पिता का पुत्र था। तथा इन्गलिश चर्च की अनुसरण के साये में पला बढ़ा था। और अंगरेज़ी पाठशाला में पढ़ने के समय इसी की अनुसारण सीखा था। और मैं प्रतिदिन कई वर्षों तक चर्च की नमाज में भाग लेता रहा। क्यों कि मैं इसको प्रतिदिन के अनिवार्यों में से एक जानता था। फिर कम आयू ही में यहूदी तथा ईसाई धर्म के आस्थाओं में तुलना करने लगा। मेरे स्वभाव ने अल्लाह के लिये शरीर स्वीकार

करना तथा उसका मनुष्यिों के पापों का क्षमा करदेने के अस्था को नकार दिया ऐसे ही किसी भी प्रकार मेरी बुद्धि यह मानने के लिये संतुष्ट नहीं थी कि इन्जील तथा उसकी कथाऐं अनेक हों ।

मैं ने यहूदी धर्म में पाया कि वे अल्लाह के कल्पना को बहुत ही अभिवादन देते हैं इसके पश्चात यह कल्पना तौरात से अलग है । तथा मैंने यहूदियों को देखा कि वे कुछ यहूदी मत का खियाल रखते हैं इस वासते मैंने इस धर्म की बहुत सी चीजें सीख ली । फिर भी मैं इस से बहुत अधिक संतुष्ट नहीं था । और अगर हम यहूदी मत की सारी शिक्षाऔं तथा उसके नोदनों को लागू करने लगैं तो संसार की जीवन के देख रेख के लिये थोड़ा भी समय मिलना कठिन होगा । क्यों कि उसमें ऐसी ऐसी चीजें है कि जबतक हम अपनी सारी बौद्धिक प्रयास न लगा दें गे वह समाप्त ही नहीं होंगी । तथा उसमें सब से बुरी चीज यह है कि वह अलपसंख्यक की प्रतिनिधि को अनिवार करता है जिस से विभिन्न समाजिक वर्गों के बीच बहुत बड़ी खाड़ी का कारण बनता है । निस्सन्देह मैं चर्च में ईसाइयों तथा यहूदियों की नमाज में जाता था प्रन्तु वास्तविक में इन दोनों मे से किसी भी को अपना धर्म नहीं मानता था ।

मैं ने रूमानी कैथोलिक में देखा कि यह धर्म मनुष्य की सामाज के लिये बिल्कुल झुक जाये क्यों कि मनुष्य अपूणता है । जबकि यही धर्म पोपो तथा उनके मानने वालों की इस प्रकार पवित्रता करते हैं कि उनको ईश्वरत्व तक पहुँचा देते हैं ।

फिर मैं हिन्दू दर्शनशास्त्र पढ़ने लगा उस में से जहाँ अधिक चीजैं अच्छी लगीं वहीं पर अधिक से अधिक चीजैं मेरी बुद्धि में न आईं । ऊस में मैं ने समाजिक रोगों के लिये कोई उचित याचना न पाया । हाँ जहाँ उस धर्म में साधुओं के लिये बहुत से विशिष्टताएं हैं वहीं पर उस धर्म में निर्धनों के लिये कोई कृपा का सामान नहीं है । और जब बुद्धिष्ट के ओर देखा तो उस से मैंने बुद्धि तथा उसके नियमों से कुछ लाभ उठाया प्रन्तु यह धर्म भी हिन्दू धर्म के प्रकार नैतिक शिक्षाओं से खाली है । उस में मैने देखा कि किस प्रकार मनुष्य आदमी की शक्ति के ऊपर पहुंच सकता है । प्रन्तु मैं शीघ्राति शीघ्र यह भाँप लिया कि यह शक्ति जैसा कि उनका याचना है आध्यात्मिक समुन्नत की कोई प्रमाण नहीं है । इसी प्रकार अगर हम ईसाई एवं बुद्धिष्ट की शिक्षा के ओर देखें जैसा कि इन दोनों धर्मों के संस्थापकों ने चाहा है कि सामजिक

समस्साओं पर ध्यान दिया जाये। क्यों कि उनके कहने के अनुसार ईसा एवं बुद्ध ने सारी स्वामित्व तथा हृदय के लिये सारी लज्जत की चीजों के छोड़ने पर उभारा है। ताकि अल्लाह से सम्बन्ध बन सके जैसा कि उन का कहना है कि निकृष्टता का प्रतियोगिता न करो,,कल आने वाली चीज़ों में अपने आप को न लीन करो,, आदि।

इस मार्ग पर जो चल सकते हैं उनके पूरे आदर के साथ तथा इस विश्वाष के साथ कि यह उनका अल्लाह के साथ सम्बन्ध है प्रन्तु इस बात पर भी पूरा विश्वाष है कि आम जन्ता इस मार्ग पर नहीं चल सकती। क्यों कि इससे आम किसान तथा अनपढ़ लोगों का विकास नहीं हो सकता। जिस से यह शिक्षा समाजिक रूप से बहुत कम स्वीकार होगा क्यों कि इस का आम जन्ता पर कोई प्रभाव न हो गा।

मैं अधिक दिनों से अरब देश में था फिर भी इस्लाम के बारे में मेरा कोई अयोजन न था। तथा जिस प्रकार मैं ने दूसरे धर्मों को पढ़ा वैसा इस्लाम को पढ़ा भी नहीं। इस्लाम से मेरा पहला सम्पर्क कुर्आन का वह अनुवाद पढ़ कर हुवा जो रोडील ने किया था। उसके पढ़ते ही मेरे भीतर जो आवेशपूर्ण

अवेश एवं उल्लास उत्पन्न हुवा वैसा मैं ने किसी धर्म के पढ़ने से न पाया । फिर तुरन्त लन्डन में एक प्रसिद्धि इस्लामिक आवाहाहक से मिला तथा मुझे काफी आश्चर्य हुवा कि विमुस्लिमों तक इस्लाम की सार्वभौम निर्माण तथा शिक्षा पहुचाने में कितने पीछे हैं ? जब कि इसका परिणाम बहुत अच्छा निकल सकता है । फिर मुसलमान आवाहक द्वारा सुशील मार्ग दिखाने से कुर्आन का वह अनुवाद पढ़ा जिसका अनुवादक एक मुसलमान था । फिर इस्लाम के बारे में बहुत सी इस्लामिक पुस्तकैं पढ़ीं । इन पुस्तकों के पढ़ते पढ़ते इस्लाम के बारे में एक अच्छी सोच हमैं मिलने लगी । और बहुत ही थोड़े दिन में मुझे मेरा खोया हुवा जीवन निधि मिलने लगा । जिस को मैं बहुत वर्षों से खोज रहा था ।

एक दिन मुझे ईद की नमाज का निरीक्षण करने तथा नमाज के बाद खाना खाने पर बुलाया गया । मुसलमानो के धार्मिक सभा के देखने का यह मेरे लिये बहुत ही उचित अवसर था । इस में अंतर्राष्ट्रीय मुसलमान उपस्थित थे वहाँ न कोई भेद भाव था न बटवारह और न ही जाति एवं पक्षपात । बल्कि विभन्न समाज एवं भूगर्भ के हर रंग के लोग थे लेकिन

कोई वर्गभेद न था सारे के सारे लगता था कि भिन्न शरीर और एक प्राण हैं । सारे के सारे एक साथ खाना खाने के लिये बैठे छोटे बड़े का कोई अन्तर वहाँ न देखा गया । समता अपसी मेलजोल का एक अनोखा उदाहरण लग रहा था ,काले गोरे का न कोई अन्तर तथा न ही धनमान एवं निर्धन का । सब भाई भाई थे ।

इस्लाम धर्म में जो मैं ने जीवन की सारी बातों का समाधान पया जो कि दूसरे धर्मों में बिल्कुल नहीं हैं उनको मैं लिख नहीं सकता । केवल मैं इतना कहता हूँ कि संसार में सारे प्रसिद्ध धर्मों के बारे में पढ़ने तथा मनचिन्तन करने के बाद इस्लाम को मैं ने स्वीकार किया है । इस्लाम की जहाँ बहुत सी विशेषतायें हैं वहीं इस्की एक महत्व बात यह है कि बिना किसी बदले के किसी यात्री एवं अपरिचित मनुष्य के संग दया प्यार तथा अच्छा व्यवाहार करने का उल्लास इस्लाम ने जो अपने मानने वालों को सिखाया है वह किसी भी धर्म वालों में नहीं है यह बात मैं इस लिये लिख रहा हूँ क्यों कि मैने बहुत सारे देश का यात्रा किया है तथा बहुत सारे लोगों से मिला हूँ । इसी प्रकार धनमान एवं निर्धन के बीच अन्तर को समाप्त करने वाला धर्म मात्र इस्लाम है । अतः केवल इस्लाम दीनप्रतिपालक है ।

केवल इसी धर्म में महिला,पुरुष, समाज,देश.राजा,प्रजा.धनमान,निर्धन,हर प्रकार के लोगों के लिये शीतल छाया है . जो किसी और धर्म में नहीं है . प्रन्तु इस बात का ज्ञान उस समय प्राप्त तथा विश्वास होगा जब हम शुभ कुर्आन एवं अन्तिम संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा को पढ़ेंगे तथा अपनायें गे, फिर आप भी वही बात कहें गे जो मैं कहता हूँ कि इस्लाम विश्वधर्म तथा विश्वशान्ति ,विश्वविधिन,विश्वसंध,लोकप्रिय,सवक्षमा,शोच्य, समता, अनुपम,प्रलोकयाद दिलाने वाला,सतीत्व का रखवाला, मानव बुद्धि का रक्षक सारे लोगों के पालनहार अल्लाह का इच्छित धर्म है ।

# कोल . डोनल्ड रोकेल (9)
# COL.DONALD.ROCKWELL

इस्लाम की सरलता तथा मुसलमानों की मस्जिदैं एवं उन दोनों के विस्तृत भूमि में जो मर्यादा,चहल पहल,साहष्णुना जो मुसलमानों को दूसरों से अलग करदेता है,तथा वह विश्वास जो पूरे संसार में फैले हुये करोडों के हृदय में पाया जाता है,मुसलमानों का प्रतिदिन पाँच समय पाबन्दी से नमाज़ पढ़ने के लिये मस्जिदों में आना यह वह महत्व चीजैं हैं जिनका मेरे ह्रदय पर गहरा प्रभाव पडा है |

जब मैं ने मुसलमानो में सम्मिलित होने को दृढ़संकल्प कर लिया तो हमको बहुत सारे महत्व कारण एवं निरोधक प्राप्त हुये | जिन से मेरा विश्वास तथा दृढ़संकल्प और अधिक हो गया | जीवन की नई उठान का कारण अन्तिम ईश्दूत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वह मार्ग है जिस में सम्मति सन्तुलित एवं अति उत्तम तथा प्रयासिक नमूना है इसी प्रकार उनका चिकित्सक पथ प्रदर्शन, भलाई एवं शुभेच्छा,शुभ चिन्ता तथा कृपा पर उभारना | सारे मनुष्यिों के साथ शुभ व्यिहार का निमंत्रण देना | महिला को स्वामित्व सत्यप्रिय अधिकार देना यह तथा इस प्रकार की बहुत

सी शिक्षायें जिनको ले कर मक्कह देश के बासी अन्तिम ईश्दूत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ले कर आये हैं । मैं ने अपनी इस जीवन में इस दीन के अनुसार मुसलमानों को चलते देखा है जो अन्तिम ईश्दूत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने संक्षिप्त अचल बातों में कह दी हैं ।

दूसरे धर्मों के साथ इस्लाम की विशालता - जो कि उस के उच्चादृष्टा एवं उच्चोत्साही की निशानी है - इस्लाम को उन लोगों के हृदय के बहुत नज़दीक कर देता जो विचारस्वच्छदता के प्रेमी हैं। क्यों कि अन्तिम ईश्दूत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने स्वीकार करने वालों को तौरात एवं इन्जील पर आस्था रखने वालों के संग शुभ व्यवहार करने का आज्ञा दिया है,तथा इस बात पर आस्था रखने का आज्ञा दिया है कि इब्राहीम, मूसा, ईसा एक अल्लाह के ओर से ईश्दूत हैं । निस्संदेह यह इस्लाम की वह विशालता है जो दूसरे धर्मों में नहीं है ।

मूर्ति पूजा से पूर्ण स्वाधीनता इस्लामी आस्थाओं के आधार की कल्याण तथा उसके पवित्रता की तर्क है.

दूसरी महत्व बात यह है कि वह असली शिक्षायें जिन को लेकर अन्तिम ईश्दूत मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमआये उसको आज तक विभिन्न प्रकार की प्रयास के बाद भी न बदल सके आप कुर्आन को देख लें यह अपने उसी असली रूप में आज भी है जिस प्रकार अन्तिम ईश्दूत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उस समय के अनेकेश्वरों की पथप्रर्दशन के लिये उतारा था। तथा उसी प्रकार सदैव बाक़ी रहेगा।

और हर चीज में मध्यता एवं माध्यमिक यह दोनों इस्लाम की वह महत्व आधार हैं जिस ने मुझे अपनेओरखींच लिया तथा मैं उसका आदर करने लगा।

इस्लाम के स्वीकार करने के यह भी कारण बने जो दूसरे धर्मों में न के बराबर हैं। कि अन्तिम ईश्दूत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी समुदाय की स्वास्थ्य के लोलुप थे इसी कारण उन्हों ने उनको असीम सफाई एवं पवित्रता अपनाने का आदेश दिया है। तथा रोजह रखकर शरीरिक वासना पर नियंत्रण रखने का आज्ञा दिया है।

यह बात उल्लेखनीय है कि मैं दिमश्क, बैतुल मुकद्दस,काहिरा,जज़ीरह आदि की मस्जिदों में गया वहाँ मैंने इस्लाम की कुशलता और शान्त पाया जिस से अध्यात्मिकता अधिक होता है । जहाँ न कोई मूर्ति न

कोई तसवीर और न ही नाच गाने की चीजें क्यों कि यह एक अल्लाह की उल्लेख के बारे में ध्यान पूर्वक चिन्तन करना तथा सारे भेद भाव एवं ऊँच नीच को भूल जाने का अस्थान है , और यह किसी धर्म के पूजा अस्थान में नहीं पाया जाता है । इस से बढ़ कर और कि मस्जिद में सत्ता वाले राजा एवं भिकारी निर्धन के बीज पूर्ण समता होता है क्यों कि सारे के सारे एक अल्लाह को सजदह एवं पंचाग करते हैं । ऐसा नहीं है कि वहाँ किसी धनी या राजा के लिये विशेष अस्थान हो या जाति पात का कोई बटवारह हो ।

इसी प्रकार मुसलामान अपने तथा अपने पालनहार के बीच किसी को यह नहीं मानता कि बिना उनके माध्यम के उस तक पहुँचा नहीं जा सकता बल्कि सारे के सारे उस अल्लाह के ओर प्रवृत्त होते हैं जो सारे सृष्टि का रचियता है कोई उसे संसार में देख नहीं सकता । तथा मुसलमान का आस्था है कि क्षमादान के लिये किसी के प्रमाणपत्र की जरूरत नहीं है ।

भ्रातृत्व का प्रभाव मैंने विश्वास के साथ अपनी आँखों से देखा कि मुसलमान इसका पालन करते हैं , यह तथा इस प्रकार की बहुत सी अच्छी चीजों ने मुझे इस्लाम स्वीकार करने पर उभारा ।

## आनिसः मस्ऊदह सतीनमान
## Miss MasudAH STEINMANN(10)

इस्लाम के अतिरिक्त मैं कोई दूसरा धर्म नहीं जानती जिसे बुद्धि स्वीकार करे तथा अपने ओर खींचने वाला हो । तथा प्रलोक में सफलता की अधिक आशा हो ।

हमने बहुत सारे धर्मों का अध्ययन किया प्रन्तु सारे धर्मों में सब से सिद्ध एवं पूर्ण इस्लाम धर्म को पाया इसी कारण मैं ने इस धर्म को स्वीकार किया ।

मैं इस्लाम को सारे धर्मों में सब से सिद्ध एवं पूर्ण क्यों मानती हूँ ? इसके कुछ कारण निम्नलिखित हैं ।

सबसे पहली चीज यह कि इस्लाम धर्म हमारी एक रचक अध्यात्म की पथप्रदर्शन करता है । शुभ कुर्आन में है ः(आप कह दीजिये कि वह अल्लाह एक ही है। अल्ला किसी के आधीन नहीं सभी उसके आधीन हैं । न उससे कोई पैदा हुआ तथा न उसे किसी ने पैदा किया। तथा न कोई उसका समकक्ष है )(सूरह इख्लास )

दूसरे अस्थान पर ऐसा है (तुमको अल्लाह ही के पास जाना है तथा वह प्रत्येक वस्तु पर पूर्ण सामर्थ्य रखता है) ( सूरह हूद ४)

इसके अतिरिक्त कुर्आन हमैं अनेक अस्थानों पर एक रचयिता की एकमात्रता का उपदेश देता है जिसका कोई आँख अनुभूति नहीं कर सकती । वह पूर्णज्ञान एवं तत्वदर्शी,प्रभावशाली,विज्ञातासूचित , सामर्थ्य, है वही आदि है वही अन्त वही प्रत्यक्ष है वही अप्रत्यक्ष, वही लोगों से प्रेम एवं कृपा करने वाला कृपालू है वही दयावान करूणामयी है वही न्यायशील है । और सत्य में इसी प्रकार पूर्णता होता है ।

कुर्आन मे अन्य अस्थानों पर हम से यह मांग की गई है कि हम अपना सम्बन्ध अपने रचयिता से बनाये रहैं । शुभ कुर्आन में हैः (विश्वास करो कि अल्लाह ही धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवित करदेता है हमने तो तुम्हारे लिये अपनी निशानियाँ वर्णित कर दीं ताकि तुम समझो ।)

हम यह भी कह सकते हैं कि अल्लाह की अध्यात्म और उस पर विशवास तथा सौभाग्य जीवन व्यतीत करने के लिये ईश्दूतों पर विशवास करना आवश्यक है । क्यों कि क्या हम नहीं देखते कि पिता अपने बालक की पथप्रदर्शन करता है ? क्या हम नहीं देखते कि वह अपने परिवार के लिये उनके जीवन की

सारी चीजों का प्रबन्ध करता है ताकि सारे परिवार संगठित जीवन व्यतीत कर सकैं ?

तथा इस्लाम यह भी प्रमाणित करता है कि वही एक धर्म है जो केवल सही है और उस सत्य की आग्रह करता है जो पहले धर्मों में आया है । और आग्रह करता है कि वह तेत्वहर्शी पथप्रदर्शन जिसे कुर्आन ले कर आया है वह प्रकट है तथा उसे मानव बुद्धि स्वीकार करता है । अतः कुरआन हमें ऐसा मार्ग दिखाता है जो रचक तथा सृष्टि के बीच सम्बन्ध को प्रकट करता है ,इसी प्रकार प्राण एवं भूत के बीच पुष्ट सम्बन्ध हो सकता है । और यही हमारे संकलप से बाहरी शक्ति एवं हमारी निजी शक्ति के बीच संतुलन को स्थिर रख सकती है । तथा हमारे हृदय मे सौभाग्य पैदा कर सकती है । इसके बिना मनुष्य कौशल मार्ग पर अच्छे प्रकार नहीं चल सकता ।

इस्लाम हमैं जहाँ अल्लाह की पवित्रता तथा उसकी धर्मशास्त्र के लिये झुक जाने का आदेश देता है वहीं पर पारस्परिक समझौता एवं कृपा और प्यार पर ध्यान देते हुये बुद्धि के प्रयोग करने का भी आज्ञा देता है । अल्लाह शुभ कुर्आन में कहता है जो कि रचक के ओर से पूरी भिन्न प्रकार के सृष्टि एवं समुदाय के लिये

संदेश है(कह दीजिये ऐ लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे सृष्टा की ओर से सत्य पहुँच चुका है | इसलिये जो व्यक्ति सीधे मार्ग पर आजाये तो वह अपने लिये सीधे मार्ग पर आयेगा , तथा जो व्यक्ति मार्ग से भटक गया तो उसका भटकना उसी पर पड़ेगा |तथा मैं तुम पर प्रभारी नहीं बनाया गया |)

इन्ही कारणो से मैंने इस्लाम स्वीकार किया |

## वीलियम बोरशेल बशीर पीकार्ड़
## William burchell Bashyr pickard (11)

vIlIm bor=el b=Ir ne lND>n
iv+viva0aly me& pI.@c>D>I ikya t9a
bhut p/isi² sMpadk hE& wnkI il`I
puStko& mese lEla mjnU. n:
dunya.oNew world)Aaid hE& |

हर बालक इस्लाम के स्वभाव पर पैदा होता है प्रन्तु उसके माता पिता यहूदी बना देते हैं या नसरानी बना देते हैं या मजूसी बना देते हैं ।

इस आधार पर मैं भी मुसलमान पैदा हुआ । यह एक सत्य है जिसका ज्ञान हमैं बहुत दिनों के बाद हो सका जिस समय मैं स्कूल एवं विश विधालय में विधार्थी था केवल उस समय के अनुसार जीवन व्यतीत कर रहा था तथा मैं उस समय कोई विशेष आदमी न था । फिर भी मैं पढ़ने में सब से आगे था ।

मैं मसीही समाज में पला बढ़ा जहाँ मैं ने रूचिकर जीवन सीखा । तथा पालनहार , पूजा के बारे में ध्यान पूर्वक सोचना मेरी मन पसन्द चीज़ थी । अथवा मैं उस समय हर चीज की पुणयता एवं सम्मान करता था । अतः उस समय मैं बहादुरी एवं धनुर्विघा की पुणयता करता था ।

हमें सदा पूर्वदिशा अपने ओर खींच रहा था। तथा मैं कमबरदज में अलफ लैला की कहानी पढ़ता था अफरीका में मैं ने उसे दोबारह पढ़ा। मैं बराबर एक अस्थान से दूसरे अस्थान का यात्रा करता रहता था इसके बाद भी पूर्वदिशा के देशों का प्यार मेरे हृदय से कम न हुआ।

वहाँ हमारी जीवन के अन्तिम समय में पहली सार्वभौम महायुद्ध आरंभ हो गई तथा मैं शीघ्र ही अपने देश यूरप लौट आया। फिर मैं बीमार हो गया, और स्वास्थ्य पाने के बाद सेना में नोकरी के लिये आवेदनपत्र दिया। प्रन्त स्वास्थ्य के कारण मेरा आवेदनपत्र स्वीकार न हुआ, फिर मैं घोड़ सवारी के ओर बढ़ा तथा चिकित्सा की गुढ़ता में मैं किसी प्रकार सफल होगया। और जब मैंने घोड़सवारी का वस्त्र पहना तो अपने भीतर प्रसन्नता पाया। फ्राँस में १९१७ में सोम्मी के युद्ध मैं मैंने भाग लिया वहाँ आहत होगया तथा अवरुद्ध बना लिया गया।

मैं ने बलजीका फिर अलमानिया का यात्रा किया और आरोग्यशाला में ठेहरा। अलमानिया में मैंने बहुत अधिक आहत मनुष्य की पीड़ा अपनी आँखों से देखा। मैं भूक से मर रहा था। क्यों कि मैं

अलमानियों के लिये लाभदायक नहीं था | मेरा दाहना हाथ टूटा था तथा स्वास्थ्य की आशा बहुत कम थी | इस कारण मुझे सुवैसरा के आरोग्यशाला में चिकित्सा एवं शल्यकिया के लिये भेज दिया गाया |

हमें यह बात याद है कि इस कठिन समय में भी मेरे हृदय में शुभ कुर्आन का अनुमान धीमा न पड़ा था | और जब मैं अलमानिया में था उसी समय अपने देश सेल(Sale) के कुर्आन अनुवाद के लिए पत्र भेजा था और कई वर्षों के बाद हमें पता चला कि वह मेरे लिये भेजा गया प्रन्तु हम तक न पहुँचा |

सुवैसरा में मेरे पैर तथा हाथ मे चिकित्सा के बाद मेरा स्वास्थ्य लौट आया और मैं अपने आस पास आने जाने के लायक हो गया | तो मैं ने सवरी(Savary) का फ्राँन्सीसी भाशा मे अनुवाद कुर्आन खरीदा | वह इस समय भी है जिसका मैं सब से अधिक आदर करता हूँ | उस में मैंने अपना सौभाग्य तथा अपने पराण का चमतकार पाया जो कि हमेशा हमेश का प्रकाश था जिस ने मेरे हृदय को अल्लाह के प्रेम तथा सम्पन्नता से भर दिया | मेरा दाहना हाथ बराबर असमर्थ था इस कारण मैं शुभ कुर्आन अपने बायें हाथ से लिखता था |

सुवैसरा में उस समय सत्य प्रकार से मैं मुसलमान हो चुका था। संधिपत्र पर हस्ताक्षर करने के बाद १९१८ दिसम्बर में मैं लंडन लौट आया। और लग भग तीन वर्ष के बाद १९२१ में अभिवादन पढ़ने के लिये लंडन के विश्वविधालय में पदार्ण ले लिया। हमारे चुने हुये विषय में से एक विषय अरबी भाषा भी था। जिसके बारे में कई भाषण सुन चुका था । एक दिन अरबी भाषा का अध्यापक एराक के श्री बेलशाह (Mr.Belshah) ने अपने भाषण में शुभ कुर्आन के ओर संकेत दिया और कहा कि (चाहे आप इस पर विश्वास करो या न करो निहसंदेह एक दिन तुम इसको अध्य्यन के योग्य महान पुस्तक पाओगे) इस पर मेरा उत्तर था (प्रन्तु निस्सन्देह मैं इस पर आस्था रखता हूँ) तो इस रोचक आश्चर्य बात चीत ने मेरे अध्यापक के तत्वावधन को उत्तेजित कर दिया और थोड़े समय बाद उन्हों ने मुझे अपने संग लन्डन के नोटिंग हील गेट(Nottig Hill Gate) मस्जिद जाने के लिये बुलाया. फिर इसके पश्चात मैं बराबर इस मस्जिद में आता रहा। इस से मेरा लाभ यह हुआ कि इस्लाम के कर्मकाणड के विषय पर हमारी व्यवहारिक परिचयइस्ते अधिक हो गई। यहाँ तक कि १९२२में मैं ने अपने

इस्लाम स्वीकार करने का घोषणा कर दिया तथा मुसलमानों की सम्प्रदाय मे सम्मिलित हो गया।
इस पर एक चौथाई सदी से अधिक बीत चुका तथा मैं उसी समय से इस्लाम को अपनी शक्ति अनुसार अपनी जीवन पर सिद्धांता एवं व्यावहारिक रूप से अनुकूल करता हूँ।

निस्संदेह अल्लाह की ईश्वरीय तथा उसकी नीति एवं दया हर चीज़ को व्यापक है। और परिचयइस्ते के मैदान हमारे समूंख इतने लंबे चौड़े हैं जहाँ तक हमारी निगाह नहीँ जा सकती। मैं पुर्ण विश्वास के साथ यह बात कहता हूँ कि हम अपनी जीवन नय्या पार कर रहे हैं हम सब को एक अल्लाह जो किसी के अधीनी नहीं है के लिये स्वीकारण का शीश नवा देना चाहिये। तथा उसी का आज्ञापालन करना चाहिये। हमारे सिर पर अल्लाह ही की पवित्रता का वर्णन एवं प्रशंसा का मुकुट होना चाहिये। उसके प्यार एवं सम्मान से हमारा हृदय परिपूण रहना चाहिये।

## ऊमर मीता
## Umar Mita (12)

मेरे ऊपर अल्लाह का कृपा एवं दया है कि उसने हमैं तीन वर्ष से सौभाग्य इस्लामी जीवन व्यतीत करने का अवसर दिया। मेरे देश के अधिक लोग बुद्धिष्ट हैं। प्रन्तु केवल वे नाम के बुद्धिष्ट हैं। न ही वे बुद्धिष्ट मार्ग पर चलते और न ही धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध करते .हो सकता है धर्म में उनकी निर्ममता का कारण यह हो कि बुद्धिष्ट धर्म लोगों के लिये गुड़ चमकीला तत्तवेवत्ता जीवन प्रस्तुत तो करता है प्रन्तु लोगों के लिये व्यवहारिक आदर्श नहीं प्रस्तुत करता। इसी कारण सर्वसाधारण मनुष्य केलिए जो कि अपनी संसारिक जीवन के काम काज में फसाँ रहता है इस धर्म के अनुसार जीवन व्यातीत करना बहुत ही कठिन है , न ही वह इस धर्म को समझ सकता है और न ही वे इसकी अनुकूल कर सकता हैं। प्रन्तु इस्लाम इस से बिल्कुल भिन्न है। इस्लाम की शिक्षा जहाँ बहुत सरल तथा इस प्रकार स्पष्ट है कि उस में कोई गुड़ नहीं। वहीं पर वह बहुत ही व्यवहारिक है।इस्लाम मनुष्य की जीवन को हर प्रकार से संगठित करता है। तथा मानवी विचार को परिमार्जन करता है। और जब

मानवी विचार उचित हो जाये तो उसका व्यवहार प्रकट रूप से उचित हो जाये गा। सर्वसाधारण भी इस्लाम की शिक्षाओं को समझ सकते हैं। क्यों कि वह बहुत ही सरल है तथा उस पर चलना और ही सरल है।
मुझे इस बात का आशा है कि जापान मेंभविष्य में इस्लाम को महत्व प्राप्त हो गा। इस मार्ग में हो सकता है कि कुछ कठिनाई आये प्रन्तु इन कठिनायों पर अधिकमण प्राप्त करना आसान होगा।

इस स्थान पर मैं यह अवश्य कहूँगा कि इस्लाम की शिक्षा हमारे उन समुदाय तक पहुचाना अवश्यक है जो प्रतिदिन भौतिकता के ओर भागे जारहे हैं। फिर भी वे उस में सौभाग्य नहीं पाते। आवश्य हम उन्हें बतायें कि वास्तविक हृदयशान्ति इस्लाम में है। क्यों कि वह जीवन के लिये सम्पूर्ण व्यावस्था है। तथा इस्लाम ही मात्र उनके पिपसा को बुझा सकता है। और अगर हम वास्तविक शान्ति चाहते हैं तो इस्लाम धर्म पर विशवास करैं सारे लोग शान्ति में रहैंगे। क्यों कि केवल इस्लाम ही में नैतिकसिद्धांत एवं बन्धुत्व है तथा इसी पर सारे मनुष्य की सौभाग्य निर्भर है।

# कुर्आन जगत प्रसिद्ध विभूतियों की नज़र में

(गाँधी जी ने कुर्आन का अध्ययन करने के बाद कहा : कुरआन का अनेकों बार मैंने ध्यान पूर्वक अध्ययन किया। सच्चाई और अहिंसा कौ शिक्षा उसमें देख कर मुझे अत्याधिक प्रसन्नता हुई।)

**श्रीमती सरोजनी नायडू ने पहली जनवरी १९४७ई० को कलकत्ता में इस महान गंथ्र के बारे में अपने विचार यों व्यक्त किए :** (कुरआन मजीद शिष्टाचार और न्याय का घोषणा पत्र है। आज़ादी का चार्टर है। व्यावहारिक जीवन में सत्य और न्याय की शिक्षा देने वाली क़ानून की महान पुस्तक है। कुरआन के अलावा कोई अनय धार्मिक पुस्तक जीवन के सारे ही मामलों और पहलुओं की व्यवहारिक व्याख्या और हल पेश नहीं करती।)

**नेपोलियन ने कहा थाः** (वह दिन दूर नहीं कि सारे ही देशों के नीतिज्ञ मिल कर कुरआन के सिद्धान्तों के अनुसार एक ही ढंग के शासन को अपनायेंगे। कुरआन की शिक्षायें और उसके सिद्धान्त सत्य पर आधारित हैं और मानव जाति को खुशियों और खुशहालियों से मालामाल करने वाले हैं। अतः अल्लाह के )जे हुए

रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उन पर अवतारित की हुई किताब कुरआन पर मुझे गर्व है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में श्रद्धांजली पेश करता हूँ ।)

**डा॰सेमूएक जानसन अपनी जगत प्रसिद्ध पुस्तक (ओरियन्टल रिलिजेन्स)में लिखते हैंः** (वह(कुरआन) एक आहवानकर्ता की पुकार है । हिक्मतों से )री हुई जिद्द जुहद की ओर अमल का जोश भर देने वाली किताब है । अपने संदेश का विरोध करने वालों को चुनौती देने वाली किताब,दर्द और सहानुभूति के साथ उन्हें समझाने वाली किताब़॰॰॰॰॰॰।सबसे पहले इस किताब ने अपने संदेश को अपनाने वालों के दिलों को गरमाया, फिर उनको एक सामूहिक आन्दोलन में बदल दिया । यह आन्दोलन तूफान की तरह उठा और ईरान तथा एशिया विभिन्न देशों से गुजरता हुआ दूर तक जा पहुँचा ।)

**मिस्टर राडवेल ने कुरआन मजीद के बारे में कहाः** (अरब करे जाहिल अनपढ़ और असभ्य लोगों को एक थोड़ी सी अवधि में संसार के नेतृत्व तथा शासन के योग्य इस किताब ने बनाया । मानो किसी ने जादू की

छड़ी घुमा दी और एक महान क.ांति अरबों में तुरन्त फैल गई ।)

**जर्मनी के विद्वान गोयटे ने कहा :** (जब भी मैं कुरआन को देखता हूँ नये नये अर्थ वह खोलता चला जाता है । यह किताब अपने पढ़ने वालों को धीरे धीरे अपनी ओर खींचती जाती है और अन्ततः उसके मन-मस्तिष्क पर छा जाती है ।)

**प्रसिद्ध इतिहासकार गिब्बन ने इस शब्दों में अपनी श्रृद्धा प्रकट की है :** (एकेश्वरवाद को स्पष्ट शब्दों में बयान करने वाली और हृिदय पर एकेश्वरवाद की छाप लगाने वाली महान पुस्तक कुरआन मजीद है ।)

**इन्साईक्लोपीडिया आफ ब्रिटानिका के सम्पादक लिखते हैं :** (संसार में सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली तथा कंठस्थ की जाने वाली पुस्तक कुरआन है । यह विशेषता संसार की अनय किसी धार्मिक पुस्तक में नहीं है ।)

**डा॰ मोरिस बुकाय लिखते हैं :** (आधुनिक ज्ञान के प्रकाश में कुरआन का निष्पक्ष होकर अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि दोनों में परस्पर मतैक्य पाया जाता है ।यह सम्भव ही नहीं कि हम यह सचि सकें कि मुहम्मद सल्लल्लाहय अलैहि वसल्लम के समु का कोई

मनुष्य अपने समय के ज्ञान के आधार पर ऐसे वक्तव्यों का रचयिता हो सकता है, आधुनिक जानकारी तो उस समय उपलब्ध ही नहीं थी ।)
(देखें!कुरआन की शीतल छाया लेखक, डा॰मुहम्मद ज़िया उर्रहमान आज़मी एम॰ए॰पी॰एच॰डी॰प्रो॰मदीना विश्वविद्यालय)